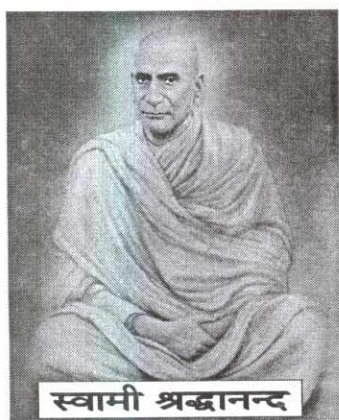




स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या: । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।



पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 37 अंक 10

“शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है”

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 300 रुपये

अक्तूबर, 2014 विक्रम सम्वत् 2071 आश्विन-कार्तिक सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली

श्री विजय गुप्त

श्री सुरेन्द्र गुप्त

प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

राष्ट्रीय उत्थान

- डॉ. सुमेधा विद्यालंकार
गुलमोहर पार्क



अपना शत्रु मान कर उग्र रूप धारण कर लेते हैं, जिसका परिणाम घोर हिंसा और विनाश का रूप ले लेता है।

2. भाषा समस्या : यह राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बहुत बड़ा रोड़ा बन कर खड़ी हो गई है। पहले यह कोई समस्या नहीं थी पर धीरे-धीरे यह उलझ कर इस सीमा तक पहुंचती गई कि सब अपनी-अपनी भाषाओं का ढोल पीटने लगे और राष्ट्रीयता की भावना को भूलते गए।

3. प्रान्तीयता और जातिवाद : तीसरी ऐसी समस्या है कि सारा भारतीय समाज आज जातिवाद की व्याधि से ग्रस्त जर्जरित हो रहा है। जातिवाद के उन्मूलन के लिए जहां शिक्षण संस्था उपयोगी हो सकती है वहां अनेक सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं भी महत्वपूर्ण हो सकती हैं। राष्ट्रवाद मानव-जीवन को ऊंचा उठाने का आधार है। राष्ट्रीयता की भावना जब तक मन में रहेगी कोई व्यक्ति देशद्रोही नहीं बनेगा। राष्ट्रीयता ही एक जंजीर है जो विभिन्न जाति वर्ग वालों को बांधे रखती है।

भारत के विख्यात तत्वचिन्तक स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान में रेल-यात्रा कर रहे थे। वे एक रेलवे स्टेशन पर उतरे, पर कहीं फल नहीं मिले। भूख से परेशान वे रेल-डब्बे में अपने स्थान पर आए और असन्तोष के भाव से

वे कुछ कहने लगे। साथ बैठे एक जापानी यात्री भारतीय साधु यात्री की परेशानी से चिन्तित हो गए। पूछने पर स्वामी जी ने कहा, यह कैसा देश है जहां खाने के लिए फल खरीदना चाहो तो मिलते नहीं। जापानी यात्री ने कलाई की घड़ी देखी, गाड़ी छूटने में कुछ मिनट बजे थे। चलते हुए बोले, 'महाशय मैं अभी आता हूं।' कुछ ही मिनटों में जापानी मुसाफिर फलों से भरी एक टोकरी ले आए और उसे उन्होंने भारतीय साधु को सौंप दिया। स्वामी जी प्रसन्न हो गए और फलों की कीमत पूछ कर देने लगे। जापानी व्यक्ति ने कहा, "कुछ कीमत नहीं, केवल इतना ही, कभी भविष्य में यह न कहियेगा कि हमारे देश जापान में फल नहीं मिलते। हमारे राष्ट्र का यह बहुत बड़ा अपमान होगा।" भारतीय सन्यासी निरुत्तर हो गए। उस जापानी यात्री की देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना ने उनका मुंह बंद कर दिया था।

राष्ट्रीयता के लिए राष्ट्रगान, अपना झंडा, राष्ट्रभाषा- ये 3 आवश्यक हैं। विजय लक्ष्मी पंडित जब रूस में भारतीय राजदूत बनी थीं, वहां जाने पर उन्होंने अपना परिचय पत्र इंग्लिश में दिया था। पर वहां वालों ने लेने से इन्कार कर दिया और कहा 'यदि आपके देश की भाषा नहीं है तो रूसी भाषा में दीजिए।'

दिल्ली विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति एवं भूतपूर्व संसद सदस्य डॉ. स्वरूप सिंह एक बार अपनी मित्र-मण्डली में बैठे थे। वहां यह चर्चा चली कि हमें अपने राष्ट्रीय गौरव को सर्वोपरि स्थान देना चाहिए। उस अवसर पर उन्होंने अपना एक संस्मरण सुनाया। उन्होंने कहा 'मैं एक बार लन्दन के बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर में गया। बरसाती मौसम होने से मैंने ओवर कोट पहना हुआ था। उस स्टोर में एक काउंटर पर एक से एक बढ़िया घड़ियाँ देखीं। मैंने एक घड़ी पसन्द की, उसकी कीमत देकर कैश-रसीद से वह घड़ी लेकर अपने ओवर कोट की जेब में डाली। मौसम साफ हो जाने से ओवर कोट उतारा, तह लगा कर अपने हाथ में ले लिया। कुछ दूर जाने के बाद घड़ी याद

आई। सब जेबें टटोलने पर भी वह कीमती घड़ी कहीं नहीं मिली। मैं लौट कर उसी स्टोर में गया। घड़ी की रसीद दिखा कर मैंने कहा, 'मैंने यहां से घड़ी खरीदी थी, परन्तु लगता है मैं घड़ी लेना भूल गया। घड़ी मुझे कहीं नहीं मिली।' तभी वहां के एक अधिकारी आ गए। सारी बात सुन कर उन्होंने वैसी ही एक घड़ी मंगवा कर मुझे सौंप दी।

इस घटना के 3-4 दिन बाद अपनी बरसाती की जेब में वह घड़ी मिल गई। मैं भागता हुआ उस स्टोर में गया। अपनी भूल स्वीकार करते हुए वह घड़ी वापिस कर दी। साथ ही कहा-उस दिन एक डिलीवरी होने के बावजूद आपने कैसे दूसरी घड़ी दिलवा दी? स्टोर के अधिकारी बोले, 'हमें भरोसा था कि घड़ी दे दी गई है, पर उससे अधिक हम अपने कस्टमर का सम्मान करते हैं। यह हमारे राष्ट्रीय सम्मान का सवाल था, इसलिए तुरन्त घड़ी मंगवा दी गई।'

आज राष्ट्रीयता की भावना क्षीण हो रही है। हमारे नेता संविधान की धाराएं गिन रहे हैं। मनुस्मृति और चाणक्य की नीति में आजतक संशोधन की जरूरत नहीं पड़ी। हमारे संविधान में कई संशोधन हो चुके हैं। राष्ट्ररक्षा के लिए जहां सैन्य शक्ति आवश्यक है वहां उसके साथ जब तक मन की अनुकूलता तथा मनोबल नहीं होगा, तब तक सैन्यशक्ति सफल नहीं होगी। अर्जुन इतना शक्तिशाली होते हुए मन दुर्बल हो जाने से, पहले युद्ध करने से विरत हो गया था। श्री कृष्ण के ज्ञानवर्धक एवं कर्तव्य मूलक उपदेश (गीता) के बाद ही उसका मनोबल जागरूक हुआ, फिर वह युद्ध के लिए तैयार हुआ।

किसी राष्ट्र की रक्षा के लिए उसके नागरिकों को दीक्षा अर्थात् राष्ट्र की रक्षा का संकल्प, तप अर्थात् राष्ट्र की रक्षा के लिए सब तरह के कष्ट सहने की तत्परता, ये दोनों आवश्यक हैं। उसी स्थिति में राष्ट्रीय उत्थान सम्भव है और हमारा "जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" यह प्रेरणा स्रोत सार्थक हो सकेगा।

यह वैदिक विचार-धारा ही इस भारत राष्ट्र का मूल है। हमारी वैदिक संस्कृति से हमें यही शिक्षा मिलती है।

जिस प्रकार मानव-जीवन के लिए शरीर, मन और आत्मा इन तीनों का होना आवश्यक है, उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र का भी शरीर, मन और आत्मा होना आवश्यक है। तभी वह जीवन्त राष्ट्र बनता है। राष्ट्र का शरीर है वह भूमि-खण्ड जो उसे अन्य देशों से अलग करता है। ऐसे भौगोलिक परिवेश का नाम ही देश है। शरीर में जो स्थान मन का है देश में वहीं स्थान जन का है। अगर केवल भूमि खण्ड ही हो और उसमें रहने वाले जन न हों तो वह देश राष्ट्र नहीं कहला सकता।

इसी तरह राज्य तो किसी राजा के अधिकार में जितना भूमि-भाग होता है वह राज्य कहा जाता है। तभी कहा जाता है कि एक राजा ने दूसरे के राज्य पर आक्रमण किया या अधिकार कर लिया। पर राष्ट्र में वहां के निवासी, वहां की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, भाषा वेशभूषा आदि सबका समावेश है। इस तरह राज्य की सीमाओं की रक्षा का दायित्व तो सेना का होता है पर राष्ट्र की रक्षा का दायित्व वहां के निवासियों पर होता है। जब तक अपनी सभ्यता संस्कृति, भाषा सुरक्षित नहीं होती तब तक हमारी राष्ट्रीयता अधूरी है।

देखा जाए तो आज देश में भिन्न-भिन्न प्रकार की कुरीतियां हिंसा, प्रतिशोध की भावना पनप रही हैं। उग्रवाद, आतंकवाद का आतंक चारों ओर फैल रहा है। जातिवाद, सम्प्रदायवाद, विभिन्न मत मतांतरों का विस्तार हो रहा है, ऐसी स्थिति में कैसे राष्ट्र का निर्माण व उसकी रक्षा हो सकती है। यह चिन्तन का विषय है।

राष्ट्रीय उत्थान के लिए सबसे पहले राष्ट्रीय एकता आवश्यक है। किसी भी देश की सुख समृद्धि, प्रगति और विकास उसके नागरिकों की पारस्परिक एकता, सद्भावना और प्रेम-सहिष्णुता पर निर्भर है। जब पारस्परिक फूट की प्रवृत्ति प्रारम्भ हो जाती है तब विकास और निर्माण योजनाएं रुक जाती हैं। राष्ट्रीय एकता के कई बाधक तत्व हैं-

1. साम्प्रदायिकता का विषय: एक सम्प्रदाय के लोग दूसरे सम्प्रदाय वालों को

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

योग-जीव का गणित

- विजय गुप्त

एफ-1/335, मदनगौर,
अम्बेडकर नगर, नई दिल्ली

तन और आत्मा के योग से जब प्राण गतिमान होते हैं, तब उसे जीवन कहा जाता है। जीवन का प्रारम्भ शैशव की जिस अवस्था से होता है, उसमें बहुत धीरे-धीरे अपना और अपनों के बीच सम्बन्धों का बोध होता है। शिशु क अधरों पर जब मुस्कान थिरकती है, तब उससे अपने समीपस्थ के बन्धु-बान्धवों के प्रति स्नेह और वात्सल्य का सेतु बंधने लगता है। शैशव के प्रथम चरण पर उसे केवल अपने ही दुःख की अनुभूति होती है। फिर वह अपनी माँ की आंखों में स्नेह के निर्रर से प्रसन्नता का आभास करता है, उसमें उसका मन भीग जाता है। वह स्वयं एक है और एक-एक करके जब उसकी पहचान और बोध का दायरा बढ़ने लगता है, तब वह अनजाने में ही जीवन के गणित के प्रथम सूत्र योग (जमा) को सीखने लगता है। उसका नन्हा सा प्रथम पग कितना पहचानपूर्ण होता है इसका उसे कतई बोध नहीं। लेकिन उसके एक पग के साथ दूसरे का उठना और फिर तीसरे की ओर बढ़ना उसकी योग प्रवृत्ति को सामर्थ्य प्रदान करता है।

प्रायः लोग पूछते हैं, योग है क्या? विद्वान और महापुरुषों ने अनेकानेक परिभाषाओं और विश्लेषणों से इसे परिभाषित और विभूषित किया है। श्री कृष्ण योग को कुशलतापूर्वक कार्य करने का गुण मानते हैं। पतंजलि ने योग सूत्र में इसे "योगश्चित्तवृत्तिनिरोध" कहा गया है अर्थात् चित्त की वृत्ति की वृत्तियों को बुराईयों से हटाकर ईश्वर में लगाना ही योग है। प्रायः लोग आसन को ही योग संज्ञा दे देते हैं। लेकिन गणित में जब तक संख्या का ज्ञान नहीं होता तब तक उसके प्रथम सूत्र योग (जमा) को ठीक प्रकार से पहचान नहीं सकते। शरीर के योग को हम तब तक भली प्रकार नहीं कर सकते जब तक आसनों के क्रम को भली प्रकार पहचान न लें। आसन ही योग गणित के अंक हैं अर्थात् अंग हैं।

आसन अनेकानेक प्रकार के हैं जैसे-पद्मासन, वज्रासन, अर्धचन्द्रासन, ध्रुवासन, ताड़ासन, भुजंग कटि चक्रासन, उष्ट्रासन आदि।

एक से एक का जुड़ते जाना या जोड़ते जाना योग है। एक-एक फूल जुड़कर माला बनती है। एक से एक ईंट को जोड़कर दीवार, कमरे और भवन निर्माण की प्रक्रिया को पूरा किया जाता है। भवन निर्माण में तो प्रथम मंजिल के बाद दूसरी, तीसरी आदि बनाते हुए गगनचुम्बी इमारतों की परिकल्पना को आज साकार किया जा रहा है। एक से एक का जुड़ते जाना परिवार के बढ़ने और फलने फूलने का ही तो सूचक है।

एक से एक व्यक्ति का जुड़ते जाना, मानव समाज के विकसित स्वरूप

का साक्षात् दर्शन है। बाल्यकाल में बच्चा अपने एक-एक खिलौने के प्रति बड़ा सजग रहता है। वह एक-एक से अपनी पहचान का योग करता हुआ निखरता है। वह बिना सिखाए ही योग के महत्त्व को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से पहचानने लगता है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहन संगे-सम्बन्धियों के साथ बढ़ते हुए कदमों के साथ, अपनी पहचान और ज्ञान को और अधिक विकसित करने लगता है। मेरा अपना विश्वास है और मानना है कि जिस योग शास्त्र में योग जिस ओर संकेत करता है, उसमें आसनों के माध्यम से जब तन और मन एकात्म हो जाते हैं तब उस स्थिति को योगीजन और विद्वान योग का नाम देते हैं। तन-मन की इस यौगिक क्रिया का लक्ष्य परम सत्य की सत्ता परमेश्वर का साक्षात्कार करना ही है।

योग के कई चरण हैं, अनंत रूप हैं। व्यक्ति बल से योग करके बलशाली बनते हैं। युवा लोग बलवान बनने की कामना रखते हैं, धन से योग करके व्यवसायी, उद्यमी व व्यापारी सभी धनवान बनना चाहते हैं। इसके हितार्थ अनेकानेक सूत्र गढ़ते हैं। विद्या से योग करके लोग विद्वान बनते हैं। शिक्षक, वैज्ञानिक, कानून-विद्, अर्थशास्त्री आदि इसी योग के फलस्वरूप समाज को मिलते हैं। लेकिन जाने-अनजाने एक सूक्ष्म भाव जो धीरे-धीरे स्थूल आकार लेने लगता है वह है अभिमान का। शक्तिशाली, धनवान और विद्वान बनने पर अभिमान मन के भीतर फुंकारने लगता है और व्यवहार में झलकने लगता है।

क्योंकि जीवन तो गतिशील है और मानव अनेकानेक उपलब्धियों को प्राप्त करना चाहता है। केवल योग (जमा) के एक ही अधूरे सूत्र को सीखकर कोई गणितज्ञ नहीं हो सकता। जमा सीखने के बाद घटा (वियोग) का सूत्र सीखा जाता है तभी योग को समझने के लिए वियोग की कड़ी को पहचानना अति महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य होता है। बच्चा जब नए खिलौने लेने लगता है तब पुराने खिलौने को त्यागने की स्थिति बनती है। इसी क्रम का नाम ही वियोग है। भवन निर्माण के क्षणों में एक के ऊपर उठती हुई दूसरी मंजिल को देखता हुआ, निर्माता योग की इस प्रक्रिया के साथ-साथ यह भी देखता है, जमा पूंजी घर से अथवा बैंक से कितनी खर्च हुई, कितनी गई व शेष अब क्या बचा है और उसे कितनी व्यवस्था करनी है। जो खर्च हो गया, जो निकल गया, जो अब अपना

नहीं रहा, वो ही तो वियोग है, वो ही तो घटा है, इसे पहचानना जीवन के योग और गणित का महत्त्वपूर्ण दूसरा सूत्र है। बच्चा और बचपन तो केवल प्रथम सूत्र योग (जोड़) को ही पहचानता है। लेकिन बाल्यकाल से किशोर और यौवनावस्था में योग के साथ वियोग (घटा) के सूत्रों के साथ अपनी पैठ और पहचान बनानी पड़ती है। परीक्षाओं में कितने अंक बढ़े, कितने घटे के महत्त्व को गहराई से विद्यार्थी समझने लगते हैं। इसी क्रम में लाभ-हानि की व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्थितियां स्पष्ट होने लगती हैं।

व्यक्ति अपनी क्षमताओं का आंकलन कर सामाजिक सामंजस्य की व्यवहारिकता को समझने लगता है। राजनेता तो हर क्षण कितने जुड़े और कितने टूटे के चिन्तन में खोए रहते हैं। चुनाव के समय किसके साथ जुड़ने में लाभ है और किससे टूटने और रिश्ता तोड़ने में लाभ है, इसका आंकलन करके आचरण करने में राजनेता काफी पारंगत और सिद्धहस्त हैं।

योग के बाद वियोग का सूत्र यौवनावस्था तक लोग सीखते हैं, सिखाते हैं और इसका अभ्यास करते हैं। इस क्रम में यही कहना है, जब व्यक्ति अपने ज्ञान और संस्कारों द्वारा सत्य, स्नेह, श्रम, दया, उदारता, विद्या और विवेक आदि से योग करता हुआ जीवन पथ पर बढ़ता है तब निश्चित रूप से समाजोपयोगी भूमिका निभाने वाला वो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। एक नर और नारी का योग ही परिवार की पहचान और वृद्धि का कारक है।

योग और वियोग के बाद जीवन का अगला महत्त्वपूर्ण सूत्र गुणा है। यहाँ एक से एक दो न होकर, ग्यारह हो जाते हैं। ऐसा कहने का अभिप्राय है कि अपने गुणों में अपार वृद्धि की सम्भावनाओं की तलाश करना अथवा उनका निर्माण करना, व्यक्तिगत क्षमताओं को बढ़ाना, चाहे धन का अर्जन हो अथवा शक्ति की वृद्धि। प्रजातन्त्र में तो नेता एक होता है, पीछे चलने वाले, नारा लगाने वाले, जय जयकार करने वाले अनेक होते हैं। एक नारे के अनुमोदन में हजारों के समर्थन की अनुगुंज सुनाई देती है। एक पुरुष का विवाह एक स्त्री से हुआ और दोनों ओर से सम्बन्धी-मित्रों, हित-चिन्तकों की संख्या बढ़ गई। यह सब गुणा ही तो है। व्यवसायी अथवा उद्यमी या कोई भी व्यक्ति एक शून्य लगाकर दस, सौ, हजार और लाख से भी आगे बनाने और पाने का सपना संजोता है। यह योग का तीसरा चरण अर्थात् जीवन की तीसरी वो अवस्था है जिसे प्रौढ़ अवस्था कहते हैं। एक शिक्षक के पास पचास-सौ विद्यार्थी

आकर ज्ञान अर्जित करते हैं। एक शिक्षक के इस गुण से कई गुना बौद्धिक संपदा समाज को उपलब्ध हुई। एक प्रभावशाली वक्ता अथवा कोई संत पुरुष जब अपना प्रभावशाली वक्तव्य मंच से देकर नीचे उतरता है तब वह अपनी छवि को असंख्य हृदयों में पाता है। असंख्य लोग उसके अनुयायी और समर्थक बन जाते हैं।

एक जब अनेक को प्रभावित करता है तब इसे गुणा का वृहत्तर स्वरूप और सामर्थ्य मानेंगे। गृहस्थ आश्रम में गृहस्वामी में इस गुण का होना अति आवश्यक है। उसे गृहस्थी चलाने, पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों और दायित्व निभाने के लिए गुणा की समस्त सम्भावनाओं को तलाशना पड़ता है। उसे अपने बच्चों के पालन-पोषण, माता-पिता की सेवा तथा सामाजिक दायित्व के लिए इतना धन तो कमाना ही पड़ता है, जिससे वो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य के लिए भी कुछ सुरक्षित रख सके। किसान एक बीज बो कर असंख्य अन्न के दाने प्राप्त करता है। एक कली की डोड़ी पर बहुत सी पंखुडियां मुस्कराती हैं। वृक्ष की एक डाल पर असंख्य पत्ते और फूल खिलते हैं। परिश्रम और विवेक के योग से व्यक्ति अपने व्यवसाय से कई गुना धन की प्राप्ति करता है। योग के तीसरे सूत्र के रूप में गुणा, विकास और विश्वास के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त की आधारशिला है।

योग वियोग अर्थात् जमा घटा और फिर गुणा के उपरान्त भाग का चौथा सूत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जीवन के गणित की ओर एक सार्थक कदम। बचपन, यौवन, प्रौढ़ अवस्था के बाद वृद्ध अवस्था। आपका परिवार है, आपने धन कमाया, अपार सुख सम्पदा इकट्ठी की, परिवार को बढ़ाया, लेकिन बढ़ती हुई आयु संकेत करती है, चिन्तित करती है कि आपने जो कमाया है, आपके पास जो संग्रहीत है, उसे अपने उत्तराधिकारियों के मध्य कैसे विभाजित करेंगे। धनवान तो धन बांटेंगे और सम्पत्तिवान सम्पत्तियाँ। इतिहास गवाह है कि जिन बड़े-बड़े सम्राटों ने विशाल साम्राज्य स्थापित किए, सम्पदाएं इकट्ठी कीं, पर अपने उत्तराधिकारियों में भली प्रकार विभाजित नहीं कर सके, विभाजन करना ही नहीं आया, ऐसे साम्राज्य नष्ट हो गए उनकी सत्ताएं बरबाद हो गईं। जीवन में यदि आपने भाग देना नहीं सीखा, बांटना नहीं सीखा तो निश्चित जानिए बहुत प्रतिभाशाली और विवेकी होने पर भी आप सफलता को सार्थकता में बदलने में असफल रहे। अपने में गुणा के विलक्षण गुण का विकास करके शक्तिशाली राजाओं ने अपार सैनिकों को इक्कठा करके युद्ध तो जीत लिए, राज्य साम्राज्यों में बदल गए, लेकिन जब उन्हें बांटना ही नहीं आया, तब उत्तराधिकारी षड़यन्त्रों में ऐसे डूबे, ऐसे

फंसे जिससे सब कुछ छिन्न-छिन्न हो गया। इतिहास के दर्पण में हम ऐसी घटनाओं के क्रम को भली प्रकार देख सकते हैं। जिन्हें अपना सुख व दूसरों का दुख बांटना ही नहीं आया, वे यश और कीर्ति के योग से बहुत दूर हैं।

स्मरण रखें गणित के गुणा सूत्र की कुछ विशेषताएं हैं। संख्या छोटी हो अथवा बड़ी यदि उसे एक से गुणा किया जाए तो परिणाम वो ही रहेगा। संख्या में कोई परिवर्तन नहीं होगा। इसका अभिप्राय है कि किसी व्यक्ति के पास मानो बहुत कुछ है, अथवा थोड़ा है, लेकिन सबके समक्ष वो व्यक्ति अंह भाव दर्शाता है, अथवा सारी उन्नति का श्रेय अपने को ही देता है, तब उसकी स्थिति यथावत् वही रहती है। समाज में उसका प्रभाव अर्थहीन माना जाएगा। गणित के एक सिद्धान्त में यह भी है कि कोई संख्या छोटी हो अथवा बहुत बड़ी, लेकिन उसे शून्य से गुणा किया जाए तो उस गुणा का गुणन फल शून्य होगा। इसका स्पष्ट अर्थ है कोई भी व्यक्ति अथवा सत्ता चाहे कितनी बड़ी हो, शक्तिशाली हो लेकिन अगर वो अधर्म, पाप व अन्याय को अपनाती है तो ऐसी शक्ति और सत्ता शून्य में बदल जाती है। अधर्म, पाप, अन्याय और दुर्भाग्य, योग दर्शन में व्यक्तित्व के विनाश के द्योतक हैं। ये सब अवगुण शून्य की स्थिति बनाते हैं।

न्यूटन और आइंसटीन, विश्व विख्यात वैज्ञानिक और गणितज्ञ माने जाते हैं। लेकिन वो दोनों ही छोटे-छोटे हिसाब-किताब करने में भी घण्टों उलझे रहते थे। बाजार में खरीदारी करते समय दुकानदारों और न्यूटन में अकसर विवाद बढ़ जाता था। यही स्थिति आइंसटीन की थी। घर में सामान देने वाले व्यक्ति प्रायः श्रीमती आइंसटीन से शिकायत करते मिलते थे कि आपके पतिदेव को गणित आता ही नहीं, वो गलत हिसाब करते हैं।

प्रायः बड़े-बड़े दार्शनिक वैज्ञानिक जीवन के गणित और व्यवहार को भली प्रकार नहीं समझ पाते और ना ही समझा पाते हैं। एक दिन आइंसटीन अपना चश्मा ठीक करवाने के लिए किसी दुकान पर गए। जब तक चश्मा ठीक होता है, तब तक एक-डेढ़ घण्टे का समय बिताने के लिए वो कुछ दूर एक रेस्टोरेण्ट में चले गए। रेस्टोरेण्ट में बैठे लोग ज्यादा परिचित नहीं थे। अनजान सी जगह थी, तभी वेटर आया और सामने मेन्यू रख दिया। आइंसटीन ने वेटर से कहा कि वो इस पढ़कर बता दे कि इसमें क्या लिखा है। वेटर के कहा "हजूर, आप स्वयं पढ़ लीजिए।" आइंसटीन के पास चश्मा नहीं था इसलिए उन्होंने वेटर से कहा, "मैं नहीं पढ़ सकता, मेहरबानी करके तुम्हीं पढ़ के बताओ कि इसमें क्या लिखा है?" वेटर ने सकुचाते हुए कहा, "हजूर मैं इसे नहीं पढ़ सकता, क्योंकि मैं

भी आपकी तरह अनपढ़ हूँ।" आइंसटीन अवाक् उसे देखते रह गए।

अरब देश की एक बहुत प्रसिद्ध घटना है। लगभग डेढ़-दो सौ बरस पहले की बात है। एक अमीर का देहावसान हो गया। वो जनाब कबीले के सरदार थे और लोकप्रिय व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु के समय सब ओर से लोग इकट्ठे हुए। उनकी वसीयत को खोला गया और सबके समक्ष पढ़ा गया। वसीयत में उस अमीर ने लिखा था कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी सम्पत्ति का आधा भाग मेरे बेटे को, एक चौथाई भाग बेटी और दामाद को तथा सम्पत्ति का पांचवा भाग सेवक को दे दिया जाए जिसने उनकी अंत समय तक सेवा की थी। वसीयत सबके सामने पढ़ी गई। बंटवारे की बात होने लगी। तभी एक विकट समस्या खड़ी हो गई क्योंकि जब सम्पत्ति का आकलन हुआ तो उसमें उन्नीस (19) ऊंट निकले। लिखित सिद्धान्त के अनुसार 19 ऊंटों का बंटवारा एक टेढ़ी खीर हो गया। बेटे, दामाद, सेवक के मध्य विवाद अवसाद और विषाद बढ़ने लगा। बात जब परस्पर झगड़े में परिवर्तित होने लगी। तब किसी ने सुझाया कि कुछ दूर के एक कस्बे में एक विद्वान सज्जन रहते हैं, वो आपकी समस्या का निदान कर सकते हैं। सभी दावेदार मिलकर उनके पास पहुंचे। उनसे मुलाकात की। अपनी समस्या को उनके समक्ष रखा। विद्वान सज्जन ने बड़ी गम्भीरता से उनकी बात को सुना, समझा और उनसे कहा कि मैं आपकी समस्या को हल कर दूंगा। पर उसके लिए आवश्यक है कि आप सबकी बिरादरी इकट्ठी हो और सबके समक्ष निर्णय किया जाए। दिन व समय निश्चित हुआ और विद्वान सज्जन अपने ऊंट पर सवार होकर ठीक समय पर सबके बीच पधारे। उन्होंने सबको सम्बोधित करते हुए कहा, "श्रीमान जी, जिन अमीर साहबान का इंतकाल हो गया है, वो मेरे बहुत अजीज दोस्त थे। दो बरस पहले उन्होंने मुझे तोहफे में वो ऊंट दिया था जिस पर बैठकर मैं यहाँ आया हूँ। आज वक्त का तकाजा है कि मैं वो ऊंट इन्हें वापिस कर दूँ। इसलिए अब ऊंटों की संख्या 19 से बढ़कर 20 हो गई है। उन्होंने अमीर के बेटे को बुलाया और पूछा बीस का आधा भाग कितना होता है? अमीर के बेटे ने उत्तर दिया-10 ऊंट।" विद्वान सज्जन ने उससे कहा, आप अपने दस ऊंट ले लीजिए। फिर उन्होंने बेटी और दामाद को बुलाया और उनसे पूछा 20 का चौथाई हिस्सा कितना होता है, पति पत्नी ने जवाब दिया-पांच ऊंट। विद्वान सज्जन ने उनसे कहा, वे भी अपने ऊंट ले लें। फिर महापुरुष ने सेवक से पूछा 20 का पांचवा भाग कितना होता है। सेवक ने कहा, जनाब चार ऊंट। विद्वान सज्जन बोले कि आप भी अपने चार ऊंट ले

लीजिए। फिर वो विद्वान सज्जन उठे और भरी सभा को सम्बोधित करते हुए बोले, "दस ऊंट बेटे को मिले, पांच बेटी और दामाद को व चार सेवक को। यह सब मिलकर उन्नीस ऊंट होते हैं। अब बताइए, क्या मैं अपना 20वां ऊंट वापिस ले सकता हूँ।" भरी सभा के बीच सब ने समवेत स्वर में खुशी से उनकी बात का समर्थन किया और इस प्रकार समस्या को सुलझा कर वो सज्जन अपने ऊंट पर सवार होकर वापस लौट गए।

याद रखिए हमारे जीवन की व्यवस्था भी 19 ऊंटों जैसी है। आनंद स्वामी जी कहते हैं कि पांच कर्मेन्द्रियाँ, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, पांच प्राणभूत, मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार, इन 19 ऊंटों के साथ जब तक विवेक का 20वाँ ऊंट न जुड़े समस्याएं हल नहीं होतीं। जीवन और इसके सारे प्रश्न उलझे रहते हैं।

आइए, योग के सूत्रों से तन, मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार की गांठें खोलें और विकास के पथ पर स्वयं अग्रसर हों और समूचे समाज को लेकर चलें।

प्रेरणा स्रोत

—हरबंश लाल कोहली

1. भरत - खड़ाऊ को सिंघासन पर रखकर राज किया।
2. राम - लंका विजय करके भी लंका में प्रवेश नहीं किया।
3. लक्ष्मण - मुझे केवल सीता के पावों के गहनों की पहचान है।
4. हनुमान - जब संजीवनी बूटी नहीं मिली, तो सारे पहाड़ के बहुत से औषधियों उठा कर ले आये।
5. भीष्म - पिता की दूसरी शादी कराने के लिए स्वयं शादी नहीं की।
6. भामाशाह - महाराणा प्रताप को सेना बनाने के लिए अपना सर्वस्व दे दिया।
7. गुरु गोबिन्द - धर्म के लिए अपने पिता और चार बच्चों का बलिदान स्वीकार किया।
8. गुरु तेग बहादुर - इस्लाम कबूल न किया और अपना बलिदान दे दिया।
9. वीर हकीकत - इस्लाम कबूल न किया और अपना बलिदान दे दिया।
10. शिवाजी - आगरे के किले से निकल कर एक नया उदाहरण स्थापित किया।
- मुस्लिम महिला को पति के पास पहुँचा दिया, और कहा काश मेरी माता इतनी सुन्दर होती।
11. वीर सावरकर - अंडमान में कोल्हू का बैल जोता और जहाज़ से समुद्र में छलांग लगाई।
12. बाल गंगाधर तिलक - स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।
13. सिकंदर - जीत कर सब कुछ राजा पुरु को दे दिया।
14. अशोक - कालिंग युद्ध के बाद भिक्षु बन बौद्ध धर्म का प्रचार किया।
15. स्वामी दयानन्द - सुराज से स्वराज उत्तम है। पाखंड खंडनी पताका लहराई।
16. स्वामी श्रद्धानन्द - संगीनों के आगे छाती खोल कर चांदनी चौक में आगे बढ़े।
17. महारानी लक्ष्मी बाई - बालक को पीठ पर बांध कर अंग्रेजों से लड़ाई की।
18. पंडित लेखराम - हिन्दूओं को मुसलमान बनने से बचाने के लिए चलती गाड़ी से छलांग लगाई।
19. महाराणा प्रताप - बच्चों को घास की रोटियाँ खिलाई, मगर अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
20. गुरु नानक - धनवान का भोजन त्याग भाई लालो की सादी रोटी खाई।
21. श्री कृष्ण - रणभूमि में गीता का उपदेश दिया।
22. पृथ्वीराज चौहान - शब्द भेदी बाण से मुहम्मद गौरी का सिर उड़ा दिया।
23. नेता जी सुभाष - पठान बन कर जर्मनी पहुँचे।
24. सरदार पटेल - बिना लड़ाई के, युक्ति से रियासतों को भारत में मिला दिया।

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का निधन दिनांक 03.09.2014 को नई दिल्ली में हो गया है।

आप श्री योगेश मुंजाल, की धर्मपत्नी एवं सत्यानन्द मुंजाल जो कि विश्व की आर्य समाजों में चर्चित नाम है, कि पुत्रवधु थीं।

दिनांक 06.09.2014 को हुई प्रार्थना सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रेरक प्रवचन हुए। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो।

बलिदानियों द्वारा ही हैदराबाद मुक्त हुआ है।

मराठवाडा के औरंगाबाद शहर में "तामिरे मिल्लत" संस्था के कुछ पदाधिकारियों ने अपने देशद्रोही वक्तव्य को उगलते हुए कहा कि मीर उस्मान अली 7 वे निजाम के साथ 'जैसे थे' करार तय होने के पश्चात् भी सरदार वल्लभ भाई पटेल ने धोखाधड़ी और जबरदस्ती से पोलिस एक्शन के नाम पर सेना भेजकर हैदराबाद रियासत पर कब्जा कर लिया। यह निजाम मीर उस्मान अली के साथ धोखा ही तो था। यह मुक्ति संग्राम काहे का? यह तो धोखाधड़ी थी, इतिहास को तोड़ मरोड़कर पेश किया जा रहा है स्कूलों में गलत ढंग से बच्चों को इतिहास पढ़ाया जा रहा है। इसलिए 17 सितम्बर यह हैदराबाद मुक्ति संग्राम दिन के नाम से नहीं मनाया जाना चाहिए। "यह विषले वक्तव्य हैं" तामिरे मिल्लत के संयोजक डॉ. चिरंजीवी कोल्लूरी, डॉ. एन. पांडुरंग रेड्डी और जियाउद्दीन नय्यर के।

"ऑल इंडिया मजलिस ए-तामिरे मिल्लत" यह हैदराबाद में सन् 1950 में स्थापित संस्था निजाम और "आजाद हैदराबाद" की तरफदारी करने वाली संस्था है। आज हैदराबाद को 65 साल भारत वर्ष में शामिल होने के पश्चात् भी यह विद्रोही बेसुरा राग अलाप रहे हैं। उक्त तीनों पदाधिकारी अपने प्रेस वक्तव्य में कहते हैं कि 1947 में लगभग सारी रियासतें हिन्दुस्थान में समाविष्ट हो गयीं लेकिन हैदराबाद रियासत पर भारत सरकार ने शामिल होने के लिए सैनिकी दबाव डाला। निजाम भारत में शामिल नहीं होना चाहता था, इसलिए उसने तत्कालिन सरकार से जैसे थे करार किया। इसका मतलब यह था कि एक वर्ष तक ज्यों कि त्यों परिस्थिती रखी जाय। लेकिन 12 सितंबर 1948 को प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू विदेश जाने के बाद सरदार पटेल ने हैदराबाद के चारों ओर से रियासत में सेना घुसवा दी। यह निजाम और हैदराबाद के साथ धोखा था। इन तीनों सदस्यों को जान लेना चाहिए कि जब जूनागढ़, भोपाल और कश्मीर जैसी मुस्लिम बहुल रियासतें भारत में शामिल कर ली गयी थीं, तो क्या कारण था कि हैदराबाद रियासत इससे अछूती रह जाय। वैसे लॉर्ड माउंटबेटन के निर्देशानुसार और बहुसंख्य जनता के मतानुसार वह रियासत भारतवर्ष या पाकिस्तान में

शामिल हो सकती थी, जब कि भौगोलिक स्थिति और जनमत पाकिस्तान के खिलाफ थे। 89 प्रतिशत हैदराबाद की जनता हिन्दुस्थान में शामिल होने की इच्छुक थी, फिर तामिरे मिल्लत के पदाधिकारी यह कैसे कह सकते हैं कि हैदराबाद आजाद भारत में नहीं रहना चाहता था। राज्य जमीन के टुकड़े को नहीं वहाँ की जनता और उसकी संस्कृति को कहते हैं।

हैदराबाद की 89 प्रतिशत हिन्दु जनता सन् 1937 से सातवें निजाम के खिलाफ जी जान से संघर्ष कर रही थी। आर्यसत्याग्रह के एक वर्ष पूर्व से अर्थात् 1937 से 1939 तक लगभग 41 आर्यों की हत्याएँ हो चुकी थीं, स्टेट काँग्रेस अपने तरीके से संघर्ष कर रही थी यहाँ तक कि निजाम के मजहब को मानने वाला शोएब उल्लाख़ाँ हैदराबाद को निजाम से निजात दिलाने के लिए 1948 में शहीद हो गया। इसके बावजूद ये लोग कह रहे हैं कि सरदार पटेल ने हैदराबाद के साथ धोखा किया यह सरासर झूठ और देशद्रोह है। इससे पूर्व तेलंगाना के मुख्यमंत्री की बेटी सांसद के कविता ने भी इसी प्रकार के वक्तव्य देकर अपने आपको सुर्खियों में किया था।

उनको भी उत्तर देते हुए मैंने कहा था कि- जब 725 वर्ष पूर्व अर्थात्, ई. सन् 1310 तक यह भाग वरमंगल (वरंगल) के काकतीय वंश के राजाओं का राज्य था। उसके बाद 1724 में आसाफजाही वंश और मध्य एशिया के समरकंद बुखारा जिसका पैत्रिक स्थान था उस निजाम उल्लमुल्क मीर कमरुद्दीन चिन किलिच खान ने हैदराबाद पर अपनी सत्ता प्रस्थापित की। सच्चा दो सौ साल हैदराबाद जनता को गुलाम बनाकर रखने से क्या हैदराबाद विदेशी आक्रान्ताओं का राज्य हो गया? यह तो हैदराबादी जनता और उनकी मातृभूमि के साथ अन्याय है।

निजाम "जैसे थे" करार के अनुसार चुप थोड़े ही बैठा था। करार की आड में वह भारत के साथ संघर्ष के लिए अनेक षड्यन्त्र रच रहा था। जैसे, बहुसंख्य हिन्दुओं को बाहर खदेड़कर और बिहार उत्तरप्रदेश से मुस्लिम मुहाजिरों को बुलाकर रियासत को मुस्लिम बहुत बनाना, मुस्लिम बहुल बनाकर अन्य राष्ट्रों की सिफारिश से सार्वमत करवाना, रजाकारों को हिन्दुओं पर जुल्म करने के लिए

-डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे

उकसाना, चकोस्लावाकिया से छुपे तौर पर 30 लाख पौण्ड के हथियार पाकिस्तान के रास्ते मंगवाना इत्यादि। यहाँ तक कि उसने सिडनी कॉटन द्वारा पाकिस्तान, गोवा के रास्ते करोड़ों के हथियार मंगवाये और रजाकारों (हिंस्र मुस्लिम स्वयंसेवक) में बटवाये थे। "जैसे थे" करार द्वारा भारत सरकार ने निजाम को यथास्थिति बनाये रखने के लिए मोहलत दी थी इसका मतलब यह तो नहीं था कि उसका दुरुपयोग कर जनता और भारत सरकार से धोखाधड़ी करे।

"जैसे थे" करार का उद्देश्य यह भी नहीं था कि हैदराबाद पूरी तरह से निजाम को सौंप दिया गया हो। उसका अर्थ यह था कि बातचीत और मेल मिलाप से हैदराबाद को भारत में शामिल करने का कोई रास्ता निकाला जाय। पं. जवाहर लाल नेहरू ने कश्मीर के मामले में जो गलती की थी (राष्ट्र संघ में कश्मीर को ले जाकर) वह गलती गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल हैदराबाद के बारे में नहीं करना चाहते थे। इस लिए एक वर्ष के लिए "जैसे थे" करार दोनों की सहमति से किया गया था। उसका दुरुपयोग पहले निजाम ने किया जब यह सरदार पटेल को पता चला तो उन्होंने यह रास्ता अपनाया और रियासत हैदराबाद को 17 सितंबर 1947 के पश्चात् 1 वर्ष 1 महीना, 1 दिन के बाद निजाम के चंगुल से मुक्त करवाया।

-सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र)

प्रजा होने को नकार दो

चुप रहना
सब सहना
सीख ले
पीटते-पीटते
हाकिम के हाथों
में पड़ जायेंगे छाले
मारते-मारते हांफने
लगेगा।
भककर हंटर गिर जायेंगे
लाश पर कैसे करेगा हुकूमत
अपने खंजर से ही गला काटेगा
हुक्मरान अपना।
कोई प्रतिवाद न होगा
तो खुद पर ही जुल्म करेगा शासक
आदत जो हैं कहर ढाने की
और फिर आजाद होंगे हम
एक ढंग ये भी है स्वतंत्रता का
या फिर मरने-मारने का खेल चलने दो
लड़ाई कहते हो तुम जिसे
लड़ो और लड़ने दो
तख्तापलट भर होगा
शासक बदलेगा बस
शासक का स्वभाव ही है कुचलना-दबाना
ये नहीं तो कोई और थामेगा लाठी
पीठ हर बार तुम्हारी ही होगी।
क्रांति तो तभी सफल
जब न कोई राजा न प्रजा
सब बराबर
प्रजा होने को नकार दो
शासक स्वयं मर जायेगा।

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी,
भरत नगर, चन्दनगांव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

दोहे

-प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डी. लिट्.

दो प्रभु ऐसी प्रेरणा, करें सदा सत्कर्म ।
विरत रहें हम पाप से, विदा करें दुष्कर्म ॥
वेद-विहित हों कर्म सब, रहें पाप से दूर ।
काम-क्रोध-मद-लोभ तज, मनुज बनें नहीं क्रुर ॥
शीतल हों हम वारि-सम, और अग्निसम ऊष्ण ।
सूर्यचन्द्र-सम तेजमय, कूटनीति में कृष्ण ॥
सेवक हों हनुमान-सम, भाई लक्ष्मण जान ।
पत्नी हो सीता-सदृश, राजा राम-समान ॥
सदाचार ईमान हो, आत्म-तत्त्व का ज्ञान ।
त्यागी हों जनक-सम, और गुणों की खान ॥
झूठ त्याग सच पर चलें, कथनी-करनी एक ।
दया-दान-परहित करें, ईश-नाम की टेक ॥
श्रेष्ठ कर्म जो कर रहे, वही प्रशंसा योग्य ।
उन्हें अभादो यत्न से, जन-जन हो आरोग्य ॥

'गोरक्षा राष्ट्र-रक्षा व गोहत्या राष्ट्र-हत्या है'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

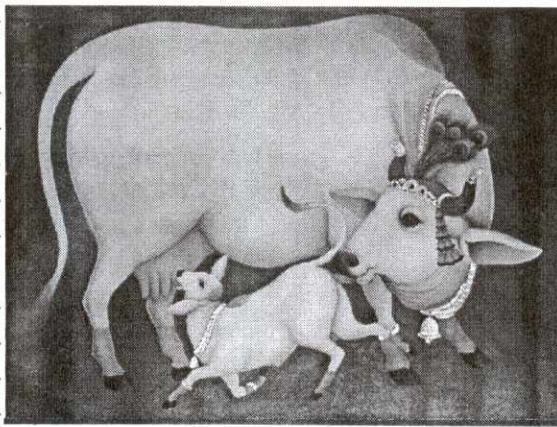
संसार में तीन पदार्थ अनादि हैं, ईश्वर, जीव व सृष्टि। जीवात्मा का स्वरूप सत्य, चेतन, अल्पज्ञ, एकदेशी, सूक्ष्म, आकार रहित, जन्म-मरण धर्मा, शरीर को धारण करना, अपने ज्ञान व अज्ञान के अनुसार अच्छे व बुरे कर्म करना, ईश्वर उपासना, अग्निहोत्र करना, माता-पिता-आचार्यों व अतिथियों की सेवा, सत्कार, आज्ञा पालन आदि का करना है। इससे वह अभ्युदय व निःश्रेयस को प्राप्त होता है। जीव जब मनुष्य जीवन में अच्छे-बुरे कर्मों को करता है तो कर्मों की कुछ स्थितियाँ ऐसी भी आती हैं जब किसी को मनुष्य का, किसी को गो का एवं अन्यो को अन्य-अन्य प्राणियों का जन्म मिलता है। गो को ही वर्तमान भाषा में गाय कहा जाता है। गाय इस संसार का एक सर्वोत्तम प्राणी है जिसके मनुष्य पर इतने उपकार हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती। इसी कारण हमारे पूर्वजों ने गाय को माँ की उपमा से नवाजा है। माँ के गर्भ में पलकर बच्चा जन्म लेता है और माँ के दुग्ध का पान कर उसका शरीर पुष्ट होकर वृद्धि को प्राप्त होता है। गाय का दूध भी माँ के दूध के ही समान गुणकारी है। गाय के बाद बकरी का दूध गुणवत्ता में माँ व गाय के दूध के कुछ समान होता है परन्तु इनसे कुछ कम हितकर होता है। ऐसा देखा गया है कि यदि किसी निर्धन परिवार में जन्में बच्चे की माँ का किसी कारण से निधन हो जाये तो वह गाय और बकरी का दूध पीकर जीवित रहता है व उसकी पालना हो जाती है। अतः वेदों ने गाय के गुणों के कारण उसे “गो विश्वस्य मातरः” अर्थात् गाय सारे संसार के लोगों की माँ है और ‘गो विश्वस्य नाभिः’ अर्थात् गाय सारे विश्व की नाभि या केन्द्र है, की यथार्थ उपमाओं से गौरवान्वित किया है।

आइये, देखते हैं कि मनुष्य के जीवन के आधार क्या-क्या हैं? मनुष्य का शरीर अन्नमय है। अन्न में गोदुग्ध की गणना भी होती है। सभी अन्नो में गोदुग्ध प्रमुख अन्न है जिसका सेवन करके मनुष्य का शरीर न केवल पुष्ट होता है अपितु निरोगी, स्वस्थ, बलवान, तेजस्वी, ओजस्वी, मेधावी, बुद्धिमान, प्रज्ञावान होता है। दुग्ध के अतिरिक्त गाय से गोमूत्र, बछड़ा या बछड़ी, गोचर्म आदि भी प्राप्त होते हैं। गोमूत्र के अनेक उपयोग हैं जिसमें से औषधीय उपयोग भी होते हैं। कैंसर रोग को ठीक करने के लिए भी गोमूत्र का सेवन किया व कराया जाता है। गोमूत्र हमारे खेतों में एक उपयोगी खाद का काम करता है। इसी प्रकार से गोबर का उपयोग ईंधन, रसोई गैस बनाने, घर व यज्ञशाला आदि की लिपाई, खाद तैयार करने आदि के रूप में किया जाता है जो प्रायः निःशुल्क ही हमारे कृषकों को उपलब्ध हो जाता है। गोबर की खाद से जो अन्न उत्पन्न होता है वह शरीर को स्वस्थ व निरोग रखने के साथ उसे बलवान व मेधावी बनाता है। गोबर की खाद से उत्पन्न अन्न को खाकर ही श्रेष्ठ सन्तान का जन्म होता है, इसी लिए भगवान राम के पूर्वज व भगवान श्री कृष्ण गोपालन करते थे और अभीष्ट फल प्राप्त करते थे। इसी प्रकार से गो के बछड़े व बछड़ी की भी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। बछड़े खेती द्वारा अन्न के उत्पादन में काम आते हैं व बैलगाड़ी में

जोते जाते हैं तथा बछड़ियाँ आयु बढ़ने के साथ गाय बन कर हमारे परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों को गोदुग्ध से अमृतपान कराकर सभी को स्वस्थ व प्रसन्न रखती हैं। इस प्रकार से गाय का मनुष्य प्राणी से माँ व पुत्र का सम्बन्ध है।

राष्ट्र क्या होता है। मनुष्यों के समूह से मिलकर एक राष्ट्र बनता है। राष्ट्र की अपनी भौगोलिक सीमायें होती हैं। वहाँ की एक मुख्य भाषा होती है, बड़े राष्ट्रों में एक से अधिक भाषायें भी हो सकती हैं। एक ही प्रकार के रीति-रिवाज, संस्कृति एवं सभ्यता होती है अथवा कुछ बाह्य अन्तर होते हुए भी आन्तरिक एकता उनमें होती है। शिक्षा की व्यवस्था के साथ चिकित्सा की व्यवस्था होती है और सेना भी होती है जो पड़ोसी व अन्य बाह्य किसी शत्रु के द्वारा देश पर हमला करने पर राष्ट्र की रक्षा करती है। इस कारण से भी राष्ट्र का बलवान व स्वस्थ होना अति आवश्यक है तभी उसका अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है। इसके लिए राष्ट्र के नागरिकों को भरपूर अन्न, गोदुग्ध, दही, मट्ठा, गोघृत आदि पदार्थों के साथ बैल व गायों की बड़ी संख्या में आवश्यकता होती है। यह गोधन कम होगा तो राष्ट्र सुरक्षित नहीं रह सकता। अतः हमें अपने जीवन की रक्षा की तरह ही गोधन की भी रक्षा करनी चाहिये तभी हम सुरक्षित व सुखी रह सकते हैं अन्यथा हम सुखी कदापि नहीं हो सकते। जिस राष्ट्र में गोहत्या होती है मानों वह राष्ट्र न होकर बुद्धिहीन मनुष्यों का समूह मात्र है। इसका कारण आगामी पंक्तियों में महर्षि दयानन्द के शब्दों में प्रस्तुत करेंगे। यहाँ इतना ही कहना समीचीन है कि गोहत्या से गो आदि पशुओं की संख्या में कमी होने से राष्ट्र में गोदुग्ध व इससे निर्मित होने वाले अन्यान्य पदार्थ तथा अन्न की कमी आदि होने से देशवासियों का स्वास्थ्य सुरक्षित नहीं रह सकता। आज अमेरिका बौद्धिक दृष्टि से समुन्नत देश होने पर भी वहाँ रोग अधिक होते हैं। तभी तो वहाँ साइड एफेक्ट वाली अंग्रेजी दवाईयों का प्रयोग सम्भवतः विश्व में सर्वाधिक होता है। यदि वहाँ के लोग बुद्धिमान हैं तो उन्हें स्वस्थ व निरोग रहने की जीवन पद्धति विकसित व उन्नत नहीं करनी चाहिये। यदि ऐसा करने पर भी रोग हो रहे हैं तो फिर उनकी जीवन पद्धति व भोजन-छादन में दोषों का होना ही रोग व दवाओं की भारती मात्रा में खपत का प्रमुख कारण है जिसे या तो वह अब तक जान ही नहीं पाये हैं या जीभ के स्वाद के कारण उसे छोड़ न पाने के कारण रोगी होते हैं। पुनर्जन्म के सिद्धान्त का ज्ञान न होने के कारण भी वह ईश्वर की यथार्थ उपासना व सत्कर्म न करके विनाश के मार्ग को अपना कर अपना व भावी सन्ततियों का भविष्य बिगाड़ रहे हैं जिससे उन्हें वर्तमान व भावी जीवन में भारी हानि होने की सम्भावना है।

विधान है। किसी भी प्राणी को अकारण दुःख देना मनुष्यता नहीं अपितु दानवता है। यह कष्ट निन्दनीय कष्ट है और दुःख है कि आज सारे संसार में गोहत्या व अन्य प्राणियों की हत्या के इस दुष्कृत्य को सबसे अधिक पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी कहे जाने वाले लोग कर रहे हैं जो किताबी ज्ञान ही रखते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान व विद्या से शून्य हैं। इसका कारण उनका अज्ञान व आत्मा पर बुरे संस्कारों का होना ही सिद्ध होता है। गाय या किसी भी प्राणी का मांस खाना किसी भी मनुष्य के लिए किसी भी परिस्थिति में उचित नहीं है। ईश्वर ने सर्पट में भोजन के लिए आवश्यकता से अधिक खाद्य पदार्थ बनाये हैं। गाय का दूध और दूध से बनने वाले अन्य पदार्थ एवं व्यंजन स्वाद में किसी भी पदार्थ व व्यंजन से कम स्वादिष्ट नहीं होते हैं। अतः गोमांस भक्षकों को जीवन के उद्देश्य, जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के उपाय, उद्देश्य की पूर्ति में कैसा भोजन उचित व अपरिहार्य है, चिन्तन, विचार व ध्यान किस प्रकार से कैसा करना चाहिये और कैसे विचार मन में आने देने चाहिये और कैसे विचार नहीं आने देने



चाहिये, इन सब प्रश्नों पर बुद्धिजीवी चाहे वह यूरोप के हों, भारत के हों या अन्य किसी भी देश के हों, सबको वेदों, वैदिक ग्रन्थों और महर्षि दयानन्द के साहित्य की सहायता से सही जीवन-यापन की नीति व रीति का निर्णय करना चाहिये अन्यथा भावी जीवन में पछताने के स्थान पर कुछ न मिलेगा। एक क्षण भी व्यर्थ गवांन अतीव हानिकारक है। जो व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करना चाहता है, उसे आज और अभी गोमांस सहित सभी प्रकार का मांसाहार छोड़ देना चाहिये। गाय और अन्य सभी प्राणर जिनमें सभी पशु व पक्षी सम्मिलित हैं, उनके प्रति दया, करुणा व प्रेम की दृष्टि रखनी ही उचित है।

जब हम यूरोप आदि विश्व के अन्य देशों में गोमांस भक्षण पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि कुछ शताब्दियों पहले वहाँ भोजन व अन्य सभी विषयों में अधिक ज्ञान नहीं था। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि क्या भक्ष्य है और क्या अभक्ष्य? वहाँ के धर्मग्रन्थों में मांसाहार के संकेत मिलते हैं जो धर्मग्रन्थ लिखे जाते समय व उससे पूर्व की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं। ज्ञान व विवेक की कमी के कारण वहाँ मांसाहार हुआ करता था और वह किसी भी पशु में भेद नहीं करते थे। उन्होंने पालतू पशुओं गाय व बकरी आदि पशुओं से ही मांसाहार का आरम्भ सुदूर अतीत में किया। अविद्या व अज्ञान के कारण ही ऐसा हुआ करता है। आज तो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी मांसाहार को उचित नहीं मानता।

यदि किसी को उच्च रक्त चाप या हृदय रोग आदि है, तो चिकित्सक उसे मांसाहार व तले हुए पदार्थ खाने से मना करते हैं। बाल व युवावस्था में किया गया मांसाहार ही इन रोगों की उत्पत्ति में सहायक होता है। यदि हम पूर्ण रूप से शाकाहारी जीवन व्यतीत करें, अपने विचारों को शुद्ध रखें तथा ईश्वर में आस्था रखते हुए प्राणायाम व पैदल चलने की आदत डालें तो रोग या तो हों ही न और हों भी तो कम से कम जैसा भारत में वैदिक काल में होता था। उन दिनों महाभारत काल में हमारे यहाँ १५० वर्ष से ऊपर की आयु के लोग स्वस्थ ही नहीं रहते थे अपितु युद्ध भूमि में पराक्रम भी दिखाते थे। किसी भी चीज का संस्कार पड़ जाने पर उसे छोड़ने में कठिनाई होती है। इसके लिए उस विषय का संशय रहित निम्नान्त ज्ञान होने के साथ दृढ़ इच्छा शक्ति का होना अति आवश्यक है। ऐसा होने पर ही संस्कार दोष छूटना सम्भव होता है। अपनी संगति को भी सुधारना चाहिये। बुरे विचारों वाले व्यक्तियों, दूषित व अभक्ष्य पदार्थों का भोजन करने वाले व्यक्तियों की संगति नहीं करनी चाहिये। यदि करेंगे तो यह दोष छूटना अति दुष्कर है। महर्षि दयानन्द ने “गोकर्णानिधि” नामक एक लघु पुस्तिका लिखी है जो गागर में सागर के समान है। प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक बार-बार और अवश्य पढ़नी चाहिये। इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द ने गणित से गणना करके सिद्ध किया है कि एक गाय की एक पीढ़ी से एक समय में दूध व अन्न से ४,१०,४४० चार लाख दस हजार चार सौ चालीस लोगों के एक बार का भोजन होता है। हमने अपनी ओर से कुछ गणना की तो पाया कि एक स्वस्थ मनुष्य के लिए एक गाय की एक पीढ़ी से प्राप्त होने वाला भोजन ५६२ वर्षों के लिए पर्याप्त है जबकि उसकी आयु तो ६० से ६० वर्ष की ही होती है। (गणना = $4,10,440 / 2/365 = 562.25$ वर्ष)। महर्षि दयानन्द द्वारा की गई यह अनुसंधानपूर्ण वैज्ञानिक गणना सम्भवतः इतिहास में इससे पूर्व किसी अन्य पुरुष ने नहीं की। वह इस विवरण को देकर आगे लिखते हैं कि “अब छह गाय की पीढ़ी-पर-पीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो ! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?” इस विवरण के बाद महर्षि दयानन्द ने बैस, ऊंटनी तथा बकरी से मिलने वाले दूध आदि पदार्थों का उल्लेख कर उससे मनुष्यों को होने वाले लाभ का विवरण दिया है। इन पशुओं की रक्षा से देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ व सशक्त होती है। महर्षि दयानन्द अन्य प्राणियों की रक्षा पर भी प्रकाश डालते हुए गोकर्णानिधि पुस्तक में लिखते हैं — “जैसे ऊंट-ऊंटनी से लाभ होते हैं, वैसे ही घोड़े-घोड़ी और हाथी आदि से अधिक कार्य सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार सुअर, कुत्ता, मुर्गा, मुर्गी और मोर आदि पक्षियों से भी उपकार लेना चाहें तो ले सकते हैं, परन्तु सबकी रक्षा उत्तरोत्तर समयानुकूल होवेगी। वर्तमान में परमोपकारक गौ की रक्षा में मुख्य तात्पर्य है। दो ही प्रकार से मनुष्य आदि का प्राणरक्षण, जीवन, सुख, विद्या, बल और पुरुषार्थ आदि की वृद्धि होती है—एक अन्नपान, दूसरा आच्छादन। इनमें से प्रथम के बिना तो सर्वथा प्रलय और दूसरे के बिना अनेक प्रकार की पीड़ा प्राप्त होती है।”

महर्षि दयानन्द के आगामी शब्द तो प्रत्येक देशवासी को बार-बार पढ़ने चाहिये--“देखिए, जो पशु निःसार घास-तृण पत्ते, फल-फूल आदि खावे और दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवे, हल-गाड़ी आदि में चलके अनेकविध अन्न आदि उत्पन्न कर, सबके बुद्धि, बल, पराक्रम को बढ़ाके नीरोगता करे, पुत्र-पुत्री और मित्र आदि के समान मनुष्यों के साथ विश्वास और प्रेम करे, जहां बांधे वहीं बंधे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहां से हटावें वहां से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें, अपनी रक्षा के लिए पालन करनेवाले के समीप दौड़कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा। जिसके मरे पर चमड़ा भी कण्टक आदि से रक्षा करे, जंगल में चरके अपने बच्चे और स्वामी के लिए दूध देने के नियत स्थान पर नियत समय पर चलें आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन-मन लगावें, जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्य के सुख के लिए है, इत्यादि शुभगुणयुक्त, सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो मनुष्य अपना पेट भर, सब संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारक, दुःख देनेवाले और पापी मनुष्य होंगे?” एक स्थान पर स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि ‘गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा दोनों का नाश होता है।’ हमें इस चेतावनी में सच्चाई दिखाई देती है। स्वामी दयानन्द की यह पंक्तियां स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं। हम समझते हैं कि कोई बुद्धिशील, ज्ञानी व विवेकी व्यक्ति यदि इन पंक्तियों को पढ़ ले तो वह जीवन में मांसाहार नहीं कर सकता।

मनुष्य गोमांस व अन्य पशु-पक्षियों के मांस का सेवन अपनी अज्ञानता, बुद्धिहीनता, मूर्खता व अविवेकशीलता आदि कारणों से करता है। उसका ध्यान कभी इन बातों पर गया ही नहीं कि जिसका उल्लेख महर्षि दयानन्द ने अपनी पुस्तक गोकर्णानिधि में करते हुए कहा है कि--“सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ने इस सृष्टि में जो-जो पदार्थ बनाये हैं, वे-वे निष्प्रयोजन नहीं, किन्तु एक-एक वस्तु अनेक-अनेक प्रयोजन के लिए रचा है, इसलिए उनसे वही प्रयोजन लेना न्याय है, अन्यथा अन्याय। देखिए, जिस लिए नेत्र बनाया है, इससे वही कार्य लेना उचित होता है, न कि उससे पूर्ण प्रयोजन न लेकर बीच ही में नष्ट कर दिया जावे। क्या जिन-जिन प्रयोजनों के लिए परमात्मा ने जे-जो पदार्थ बनाये हैं, उन-उनसे वे-वे प्रयोजन न लेकर उनको प्रथम ही नष्ट कर देना सत्पुरुषों के विचार में बुरा कर्म नहीं है? पक्षपात छोड़कर देखिए, गाय आदि पशु और कर्षण आदि कर्मों से सब संसार को असंख्य सुख प्राप्त होते हैं वा नहीं? जैसे दो और दो चार, वैसे ही सत्यविद्या से जो जो विषय जाने जाते हैं, वे अन्यथा कभी नहीं हो सकते।”

स्वामी दयानन्द द्वारा अपनी इसी पुस्तक की भूमिका में हृदय को प्रभावित करने वाले कहे शब्दों का उल्लेख पाठकों के हितार्थ करना आवश्यक समझते हैं जिसमें वह कहते हैं--“वे धर्मात्मा, विद्वान लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि-क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरोध चलके सब संसार को सुख पहुंचाते हैं और शोक है उन पर जो कि इनसे

विरोध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् की हानि करने के लिए वर्तमान हैं। पूजनीय जन वो हैं जो अपनी हानि हो तो भी सबका हित करने में अपना तन, मन, धन सब-कुछ लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर अन्य के सुखों का नाश करते हैं। सृष्टि में ऐसा कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे, वह दुःख और सुख को अनुभव न करे? जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तब विना अपराध किसी प्राणी का प्राण-वियोग करके अपना पोषण करना सत्पुरुषों के सामने निन्द्य कर्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों की आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कष्टापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रिया की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें।” अपनी मृत्यु से पूर्व स्वामी दयानन्द ने गोरक्षा का एक अभियान चलाकर गोरक्षा के पक्ष व गोहत्या के विरुद्ध ब्रिटिश पार्लियामेंट के नाम पत्र लिख कर उस के समर्थन में देश के राजा-महाराजाओं से लेकर सामान्य व्यक्ति तक करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराये और उन्हें इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट को भेजा। इससे पूर्व की उसका कोई परिणाम निकलता और वह कोई और बड़ा आन्दोलन करते, ३० अक्तूबर, १८८३ ई. को उनकी मृत्यु हो गई। इंग्लैण्ड की सरकार ने उनके उस देशहित व मानवता का पोषण करने वाले परिश्रम को निर्दयतापूर्वक रद्दी की टोकरी में ही नहीं डाला दिया अपितु इसके विपरीत कार्य किया। इससे ब्रिटिश सरकार की रीति व नीति का पता चलता है।

गोरक्षा पर उपलब्ध साहित्य में स्वामी दयानन्द की पुस्तक “गोकर्णानिधि” के अतिरिक्त इनके अनुयायी पं. प्रकाशवीर शास्त्री द्वारा लिखित ‘गोहत्या या राष्ट्रहत्या’ पुस्तक भी पठनीय है। स्वामी ओमानन्द ने “गोदुग्ध अमृत है” नाम से एक उपयोगी व जानकारीयों से भरपूर महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने “गो की गुहार” नाम से गोकर्णानिधि पर भाष्य व टीका लिखी है। स्वाध्याय करते हुए हमने मेहता जैमिनी की “गऊ भारत माता की प्राण दाता” पुस्तक का विवरण पढ़ा जिसके विषय में आर्य जगत के विख्यात विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है कि “हमने गऊ माता पुस्तक पर एक विहंगम दृष्टि डालकर देखा है कि लगभग एक सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में ५० से ऊपर पुस्तकों को उद्धृत किया गया है। वेद, उपनिषद् आदि के प्रमाण इनके अतिरिक्त हैं। इसी प्रकार देश विदेश के ५० से ऊपर डाक्टरों, वैज्ञानिकों, विद्वानों व साहित्यकारों के नाम इसमें प्रमाण स्वरूप दिये हैं। आंकड़े इतने दिये हैं कि हम गिन ही नहीं पाये। इससे हमारे पाठक पुस्तक के लेखक श्री मेहता जैमिनी के पाण्डित्य की कुछ कल्पना कर सकते हैं।” हम समझते हैं कि भारत की उन्नति के लिए गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के साथ गोसंवर्धन पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। तभी भारत पूर्ण उन्नत होकर ज्ञान-विज्ञान व जीवन में सुख-शान्ति प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगा।

शंका और समाधान

कर्मों का फल -स्व. अभयदेव दर्शनाचार्य

योग दर्शन के द्वितीय पाद सूत्र 13 में लिखा है सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः अर्थात् जो कर्म अविद्या आदि क्लेशों से युक्त होकर किये जाते हैं उनका फल जाति, आयु और भोग इन तीन रूपों में मिलता है।

जाति- मनुष्य, पशु, पक्षी आदि के शरीर आयु-प्रत्येक प्राणियों की आयु भिन्न होती है, जैसे कि मनुष्य लगभग 100 वर्ष, सर्प 150 वर्ष और कबूतर लगभग 8 वर्ष, ये आयु भी कर्म के आधार पर प्राप्त होती है।

भोग- प्रत्येक मनुष्यों के भोजन, वस्त्र आदि को भोग कहते हैं जैसे कि मनुष्य का रोटी, चावल, दूध आदि भोज्य पदार्थ तथा मकान आदि साधन।

पशु- घास व अन्न। शेर-मांस खाता है।

प्रश्न : एक मनुष्य के किये कर्म का दूसरे मनुष्य पर क्या कुछ प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : एक मनुष्य के किये कर्म का फल तो उसी को मिलता है पर परिणाम और प्रभाव दूसरे मनुष्यों पर भी देखे जाते हैं।

प्रश्न : परिणाम और प्रभाव क्या है?

उत्तर : मान लिया जाये कि किसी मनुष्य ने पत्थर फेंका, पत्थर फेंकना तो एक कर्म है। वह पत्थर किसी के माथे पर लगा, जिससे माथा फूट गया, माथा का फूटना कर्म का परिणाम है तथा पत्थर फेंकने वाला जेल चला गया है। यह है कर्म का फल। इस घटना के बाद आस पास के लोग उससे डरने लगे और पत्थर फेंकने वाले व चोट खाने वाले दोनों के घरों से धन भी खर्च हुआ, आपस में मनमुटाव भी बढ़ा यह है कर्म का प्रभाव।

अर्थात् एक के कर्म से दूसरे लोग भी बहुत अधिक प्रभावित होते हैं इसलिये इन सब बातों को ध्यान में रखके सदा शुभ कर्म ही करने चाहिये।

प्रश्न : कितने कर्मों के आधार पर कौन कौन से शरीर मिलते हैं?

उत्तर : बुरे कर्म अधिक व अच्छे कर्म कम होने पर पशु पक्षी का शरीर मिलता है और अच्छे कर्म अधिक व बुरे कर्म न्यून होने पर उच्च कोटि का मनुष्य अर्थात् देवता का शरीर मिलता है। मान लिया जाये कि 50 कर्म अच्छे और 50 बुरे हैं तो दोनों के बराबर होने के कारण मनुष्य का शरीर मिलेगा। तथा 55 कर्म अच्छे हों और 45 बुरे हों तो अच्छे कर्म ज्यादा होने के कारण देवता की योनि मिलेगी। और बुरे कर्म 55 तथा अच्छे कर्म 45 होने पर चूंकि बुरे 10 ज्यादा हैं इसलिये पशु पक्षी का शरीर मिलेगा। यदि अधिक दस कर्म पशु बनकर भोग लिये जायें तो अब अच्छे व बुरे दोनों 45-45 की संख्या में हो गये इसलिये अब भी मनुष्य बन जायेगा क्योंकि अच्छे बुरे बराबर होने पर मनुष्य का शरीर मिलता है।

प्रश्न : क्या ऐसा संभव है कि मनुष्य अगले जन्म में मनुष्य ही बने तथा हाथी अगले जन्मों में हाथी ही बने, वैसे ही अन्य प्राणी भी उसी योनि में शरीर धारण करते रहें?

उत्तर : यह विचार गलत है क्योंकि संसार में हर क्षेत्र में उन्नति करने का अवसर दिया जाता है तथा हर क्षेत्र में सबसे ऊंची उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। फिर पशु शरीरधारी पशु ही रहे, यह तो सिद्धान्त न्याय विरुद्ध है इसलिये पशु भी पाप कर्म का फल भोग कर मनुष्य बन जाते हैं क्योंकि पाप के कारण वे पशु बने थे और पाप का फल भुगत लेने पर पुनः मनुष्य बन जायेंगे तथा पशु कोई भी ऐसा कर्म नहीं करता जिसका फल अगले जन्म में मिल सके क्योंकि पशु सोचने विचार में असमर्थ है फिर कर्म कैसे करेगा और यदि कर्म ही नहीं करेगा तो जन्म कैसे मिलेगा? इससे सिद्ध हुआ कि वह बुरे कर्मों का फल भोगकर पुनः मनुष्य बन जाता है तथा पुनः बुरे कर्म करने पर फल के रूप में भिन्न भिन्न योनियों में जाना पड़ता है। इसलिये पशु का शरीर धारण करने के लिये भी मनुष्य बनना आवश्यक है तथा पशु से पशु, कर्म के आधार पर बनना संभव नहीं है। अर्थात् कोई भी पशु नवीन कर्मों के आधार पर पशु नहीं बन सकता है।

प्रश्न : क्या सभी कर्मों का फल इसी जीवन में मिल जाता है?

उत्तर : सभी कर्मों का फल इसी जीवन में मिलना संभव नहीं है। बहुत सारे कर्मों का फल इसी जीवन में मिल जाता है और जो शेष रह जाते हैं उन कर्मों का फल अगले जन्म में मिल जाता है।

प्रश्न : क्या कर्म का फल केवल ईश्वर ही देता है?

उत्तर : ईश्वर तो कर्मों का फल देता ही है उसके साथ साथ माता पिता, आचार्य, गुरु, न्यायाधीश आदि भी कर्मों का फल देते हैं। गलत कर्म करने पर माता पिता भी बच्चों को दण्ड देते हैं, यही कर्मों का फल है तथा न्यायाधीश अत्याचारियों को जेल की सजा व मृत्यु दण्ड देते हैं। इतने दण्ड देने के बाद भी जिन कर्मों का फल शेष रह जाता है उसका फल ईश्वर देता है और जिन कर्मों का फल न्यायाधीश आदि देते हैं उन कर्मों का फल फल ईश्वर फिर नहीं देता है जैसे कि गेहूँ को प्राप्त करने के लिये कुछ कर्म मनुष्य करता है तथा कुछ कर्म ईश्वर की व्यवस्था से होते हैं। खाद व पानी देना तथा खेत की जुताई किसान करता है तथा उन पौधों में अनाज के दाने उत्पन्न करना ईश्वर की व्यवस्था में है। वैसे ही कुछ कर्मों का फल न्यायाधीश आदि मनुष्य दे देते हैं तथा कुछ कर्मों का फल ईश्वर दे देता है।

30 ईसाई परिवारों की घर वापसी

सितम्बर 2014 में उत्तर प्रदेश के दातागंज तहसील में 30 ईसाई परिवारों के लगभग 175 स्त्री-पुरुषों व बच्चों को वैदिक (हिन्दू) धर्म में वापस लाया गया, यह परिवार लगभग 60 वर्ष पहले इसाई पादरी आदि के बहकावे में आकर अपने सत्य सनातन वैदिक (हिन्दू) धर्म से विछुड़ गये थे। इन परिवारों से कई माह तक सम्पर्क बना रहा उन्हें वैदिक (हिन्दू) धर्म की मान्यताएं आज कितनी आवश्यक हैं ऐसे विचारों से जोड़ा गया, तब जाकर इन परिवारों ने हिन्दू धर्म को स्वीकार किया।

शुद्धि संस्कार इनके निवास स्थान पर करावाया गया। इस कार्यक्रम अन्य संस्थाओं का भी सहयोग रहा।

—आसाराम प्रचारक (शुद्धि सभा दिल्ली)

भरपूर सहयोग के लिए धन्यवाद

श्री राजेन्द्र आर्य जी (हॉसी वाला) ने शुद्धि समाचार के 22 नये आजीवन सदस्य बनाये हैं और इनके द्वारा 6000 रुपये का दान भी एकत्रित करके, शुद्धि सभा के बचत खाते में सदस्यता शुल्क तथा दान की कुल राशि 12600/- रुपये (बारह हजार छः सौ मात्र) जमा करवा दी गयी है। इससे पहले भी श्री आर्य जी द्वारा "शुद्धि समाचार" के आजीवन सदस्य तथा दान का भरपूर सहयोग कर चुके हैं। भरपूर सहयोग करने के लिए हम श्री राजेन्द्र आर्य जी (हॉसी वाला) का हृदय से आभार प्रकट करते हैं। शुद्धि समाचार के सदस्य बनाने तथा दान एकत्रित करने में आर्य समाज सेक्टर-7 के सदस्य श्री विवेक अग्रवाल जी का भी पूरा सहयोग रहा है। हम श्री विवेक अग्रवाल जी का भी धन्यवाद करते हैं और आशा करते हैं कि शुद्धि कार्य के लिय वह भविष्य में भी इसी प्रकार का सहयोग करते रहेंगे।

—हरबंस लाल कोहली

श्री अनूप अग्रवाल जी, गीता वस्त्रालय, गीता प्रेस रोड़, गोरखपुर	300/-
श्री हर्षवर्धन आर्य जी, कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली	300/-
श्री अश्वनी आर्य जी, सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री सुरेंद्र गुप्ता जी, सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री राजीव आर्य जी, सेक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री सुरेन्द्र चौधरी जी, सेक्टर-5 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री सुरेन्द्र गर्ग जी, सेक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री संजीव गर्ग जी, सेक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री वीरेन्द्र गुप्ता जी, सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री देवराज आर्य जी, सेक्टर-24 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री अर्णव गर्ग जी, सेक्टर-14 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री प्रमोद ठाठी जी, सेक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री प्रवीण गुप्ता जी, सेक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री भारतेन्दु गुप्ता जी, सेक्टर-9 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री राजकुमार मिश्र जी, एडवोकेट सेक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री वेद प्रकाश सिंघल जी, सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री रिषभ आर्य जी, सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री कुंवर विजय सिंह, अजय सिंह राठौर जी, शांति नगर, त्रिनगर, दिल्ली	300/-
डॉ. नवीन आर्य जी, सेक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री शिव कुमार गुप्ता जी, सेक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली	300/-
श्री जवाहर गोयल जी, सुल्तानपुर-मांडी रोड, महरौली, दिल्ली	300/-
डॉ. जयदीप बंसल जी, सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली	300/-

मासिक दान दाता

श्री प्रमोद ठाठी जी, सेक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली	1200/-
श्री आशीष गुप्ता जी, डी-11, सेक्टर-8, रोहिणी, दिल्ली	1200/-
श्री वेद प्रकाश सिंघल जी, डी-11, सेक्टर-8, रोहिणी, दिल्ली	1200/-
श्री विवेक अग्रवाल जी, ई-4, सेक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली	1200/-
श्री आयुष आर्य जी, डी-11, सेक्टर-8, रोहिणी, दिल्ली	500/-
श्री संजीव गर्ग जी, जी-26, सेक्टर-3, रोहिणी, दिल्ली	200/-
श्री वीरेन्द्र गुप्ता जी, सी-8, सेक्टर-8, रोहिणी, दिल्ली	200/-
श्री देवराज आर्य जी, भूतल पॉकेट 11, सेक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली	200/-
श्री आई के हंस जी, सरस्वती विहार, दिल्ली	100/-

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान राशि

कुमारी गरिमा जी, बी.2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/-
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/-
डा. पुष्पलता वर्मा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/-
श्रीमती ऊषा कृकरेजा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/-
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली	मासिक	50/-

माह अगस्त 2014 के आर्थिक सहयोगी

श्री जे.एन. शर्मा जी, नोयडा	वार्षिक सहायता	10,000/-
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
आर्य समाज इन्द्रानगर, बगलौर, कर्नाटक	मासिक	1000/-
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी सै.-15, फरीदाबाद	मासिक	1000/-
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी (महामंत्री) शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्री विजय गुप्त जी आशु कवि, मदनगौर, नई दिल्ली		500/-
आर्य समाज आकोट (विदर्भ) जिला-अकोला-महा.		501/-
एडवोकेट विवेक कुमार राउत, नागपुर महा.		501/-
श्री राज किशोर श्री प्रभुदयाल जी, चावड़ी बाजार दिल्ली	आजीवन सदस्य	300/-
श्री राजेश मेंदी रत्ता जी, लाजपतनगर, नई दिल्ली	आजीवन सदस्य	300/-

नई स्थिर निधि के लिए- दानी सहयोगी

श्री वी.के. गौड़ जी, (डीडीए फ्लैट्स) मुनिरिका, नई दिल्ली	21000/-
श्री अशोक सहदेव जी, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली	5000/-
प्रो. डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी, उपप्रधान शुद्धि सभा	3100/-
डॉ. जे.एस. वालियान जी, मन्त्री आर्य समाज इन्द्रपुरी, नई दिल्ली	2100/-
श्री शशिकान्त जी, नीलगिरि अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली	2100/-
श्री चन्द्रभान चौधरी जी, संरक्षक शुद्धि सभा	1100/-
श्री अमरनाथ गोगिया जी, प्रधान-आर्य समाज माडल बस्ती, दिल्ली	1100/-
श्री जगदीश गांधी जी, अमर कालोनी, लाजपत नगर, नई दिल्ली	1000/-
श्री स्वदेश पाल गुप्ता जी, लाजपत नगर, नई दिल्ली	500/-
श्री के. एल. गुप्ता जी, डीडीए फ्लैट्स मुनिरिका	500/-
श्री वी.पी. चांदना जी, डीडीए फ्लैट्स मुनिरिका	200/-

श्रीमती तारा ढींगरा जी का धन्यवाद

आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर की सक्रिय सदस्या श्रीमती तारा ढींगरा जी ने अपनी सात्विक कमाई से भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को 50,000/- रु. का दान दिया है। माता जी यज्ञ प्रेमी, दयानन्द के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाली, महिला हैं। आपने आर्यसमाज राजेन्द्र नगर को एक इको वेन गाड़ी दी है तथा कई गुरुकुलों को आर्थिक सहयोग, अन्न वस्त्र आदि से करती रहती हैं। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह श्रीमती तारा ढींगरा जी को उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करे। जिससे कि उनकी उदारवृत्ति का अनुकरण समाज के अन्य लोग कर सकें तथा उनका आशीष सब को मिलता रहे। पुनश्च तारा माता जी एवं उनके परिवार का हार्दिक आभार।

—नरेन्द्र मोहन वलेचा (महामंत्री)

भरपूर सहयोग के लिए आभार :-

श्री भुवनेश कुमार गौड़ जी, डीडीए फ्लैट्स मुनिरिका (नई दिल्ली) ने अपनी पूज्य माता जी स्व.श्रीमती मनोरमा गौड़ जी की पुण्य स्मृति में शुद्धि सभा को 21000/- रुपये (इक्कीस हजार रुपये) की राशि स्थिर निधि के लिए प्रदान की है। श्री गौड़ जी इस सहयोग के लिए हम बहुत आभारी हैं परमात्मा इन्हें स्वस्थ लम्बी आयु प्रदान करें।

—हरबंसलाल कोहली

पर्जन्य वृष्टि महायज्ञ संपन्न व वर्षा प्रारंभ

आर्यसमाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) महाराष्ट्र में दिनांक 12 अगस्त 2014 से 17 अगस्त 2014 तक भारत समृद्धि के लिये पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ का आयोजन खडकेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में भारत नगर के महर्षि दयानंद यज्ञ शाला में डॉ. नंदिताजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में डॉ. कमलनारायणजी आर्य रायपुर के पौरोहित्य में तथा गुरुकुल कि ब्रह्मचारिणियों के मंत्रपाठ से प्रारंभ हुआ।

इसमें सभी मत संप्रदायों के आचार्यों तथा भारतीय जनता पार्टी महाराष्ट्र प्रान्त के प्रान्ताध्यक्ष श्री देवेन्द्रजी फडनविस, मा. केन्द्रीय राज्यमंत्री, श्री रावसाहेब दानवे, सौ. पंकजा पालवे मुंडे का भी शाल, श्री फल और स्मृतीचिन्ह देकर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा मंत्री श्री दयाराम बसैये बंधु ने स्वागत किया साथ में प्रधान जुगलकिशोर जी दायमा, कोषाध्यक्ष श्री अंड. जोगेन्द्र सिंह चौहान व सदस्य श्री जगन्नाथ जी बसैये व महावीर पाटणी भी उपस्थित रहे। ऋषि लंगर में सभी भक्तों ने डॉ. ग.चि. सिमंत गृह में सहभाग लिए।

इस पर्जन्यवृष्टि का यह परिणाम निकल रहा है कि दिनांक 17 से ही वर्षा का आना प्रारंभ हुआ है। मराठवाडा के सभी सर्वदूर तक वरूणदेवता बरस रहे हैं। यह यज्ञ की फलश्रुति है।

सेवा में,

शुद्धि समाचार

अक्टूबर - 2014

एलर्जी : कारण, लक्षण एवं उपचार

-डॉ. मनोज गुप्ता, गुडगाँव

एलर्जी या अति संवेदनशीलता आज की लाइफ में बहुत तेजी से बढ़ती हुई सेहत की बड़ी परेशानी है। कभी कभी एलर्जी गंभीर परेशानी का भी सबब बन जाती है जब हमारा शरीर किसी पदार्थ के प्रति अति संवेदनशीलता दर्शाता है जिसे एलर्जी कहा जाता है और जिस पदार्थ के प्रति प्रतिक्रिया दर्शाई जाती है उसे एलर्जन कहा जाता है।

एलर्जी के कारण - एलर्जी किसी भी पदार्थ से मौसम के बदलाव से या आनुवंशिकता जन्य हो सकती है। एलर्जी के कारणों में धूल, धुआँ, मिट्टी, परागकण, पालतू या अन्य जानवरों के संपर्क में आने से, सौंदर्य प्रसाधनों से, कीड़े, बर्तन आदि के काटने से, खाद्य पदार्थों से एवं कुछ अंग्रेजी दवाओं के उपयोग से एलर्जी हो सकती है सामान्यतया एलर्जी नाक, आँख, श्वसन-प्रणाली, त्वचा व खान-पान से संबंधित होती है किंतु कभी कभी पूरे शरीर में एक साथ भी हो सकती है जो कि गंभीर हो सकती है।

स्थानानुसार एलर्जी के कारण -

नाक की एलर्जी - नाक में खुजली होना, छींके आना, नाक बहना, नाक बंद होना, या बार-बार जुकाम होना आदि।

आँख की एलर्जी - आँखों में लामिमा, पानी आना, जलन होना, खुजली आदि।

श्वसन संस्थान की एलर्जी - इसमें खांसी, साँस लेने में तकलीफ एवं अस्थमा जैसी गंभीर समस्या हो सकती है।

त्वचा की एलर्जी - एलर्जी काफी कॉमन है और बारिश का मौसम त्वचा की एलर्जी के लिए बहुत ज्यादा मुफीद है, त्वचा की एलर्जी में त्वचा या खुजली होना, दाने निकलना, एक्जिमा, पित्ती उछलना आदि होता है।

खान-पान से एलर्जी - बहुत से लोगों को खाने-पीने की चीजों जैसे-दूध, अंडे, मछली, चॉकलेट आदि से एलर्जी होती है।

सम्पूर्ण शरीर को एलर्जी - कभी कभी कुछ लोगों में एलर्जी में गंभीर स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और सारे शरीर में एक साथ गंभीर लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं ऐसी स्थिति में तुरंत हॉस्पिटल लेकर जाना चाहिए।

अंग्रेजी दवाओं से एलर्जी - कई अंग्रेजी दवाएं भी एलर्जी का इंजेक्शन जिसका रिएक्शन बहुत खतरनाक होता है और मौत के पर ही मौत हो जाती है। इसके अलावा दर्द की गोलियाँ, सल्फा ड्रग्स एवं कुछ एंटीबायोटिक दवाएं भी सामान्य से गंभीर एलर्जी के लक्षण उत्पन्न कर सकती हैं।

मधुमक्खी, ततैया आदि का काटना - इनसे भी कुछ लोगों में सिर्फ त्वचा की सूजन और दर्द की परेशानी होती है, जबकि कुछ लोगों को इमरजेंसी में जाना पड़ जाता है।

एलर्जी से बचाव - एलर्जी से बचाव ही एलर्जी का सर्वोत्तम साधन है, इसलिए एलर्जी से बचने के लिए इन उपायों का पालन करना चाहिए -

यदि आपको एलर्जी है तो सर्वप्रथम यह पता करें कि आपको किन-किन चीजों से एलर्जी है। इसके लिए आप ध्यान से अपने खान-पान और रहन सहन को व्यवस्थित करें। घर के आस पास गंदगी न होने दें।

घर में अधिक से अधिक खुली और ताजी हवा आने का मार्ग प्रशस्त करें।

जिन खाद्य पदार्थों से एलर्जी है उन्हें न खायें।

एकदम गरम से ठंडे और ठंडे से गरम वातावरण में न जायें।

बाइक चलाते समय मुँह और नाक पर रूमाल बांधें, आँखों पर धूप की अच्छी क्वालिटी का चश्मा पहनें।

गद्दे, रजाई, तकिये के कवर एवं चादर आदि समय पर गरम पानी पानी से धोते रहें। रजाई, कम्बल, आदि को समय समय पर धूप दिखाते रहें।

पालतू जानवरों से एलर्जी है तो उन्हें घर में ना रखें। जिन पौधों के पराग कणों से एलर्जी है उन्हें दूर रखें।

घर में मकड़ी वगैरह के जाले ना लगने दें, समय समय पर सफाई करते रहें।

धूल मिट्टी से बचें, यदि धूल मिट्टी भरे वातावरण में काम करना ही पड़ जाये तो फेस मास्क पहनकर काम करें।

नाक की एलर्जी - जिन लोगों को नाक की एलर्जी बार बार होती है उन्हें सुबह भूखे पेट 1 चम्मच गिलोय और 2 चम्मच आंवले के रस में 1 चम्मच शहद मिलाकर कुछ समय तक लगातार लेना चाहिए, इससे नाक की एलर्जी में कुछ समय तक लगातार लेना चाहिए, इससे नाक की एलर्जी में आराम आता है, सर्दी में घर पर बनाया हुआ या किसी अच्छी कंपनी का च्यवनप्राश खाना भी नासिका एवं साँस की एलर्जी से बचने में सहायता करता है। आयुर्वेद की दवा सितोपलादि पाउडर व गिलोय पाउडर को 1-1 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम भूखे पेट शहद के साथ कुछ समय तक लगातार लेना भी नाक एवं श्वसन संस्थान की एलर्जी में बहुत आराम देता है। जिन्हें बार बार त्वचा की एलर्जी होती है उन्हें मार्च अप्रैल में जब नीम में पेड़ पर कच्ची कोपलें आ रही हों उस समय 5-7 कोपलें 2-3 कालीमिर्च के साथ अच्छी तरह चबा चबा कर 15-20 रोज तक खाना त्वचा के रोगों से बचाता है। हल्दी से बनी आयुर्वेद की दवा हरिद्रा खंड भी त्वचा के एलर्जी जन्य रोगों में बहुत गुणकारी है। इसे किसी आयुर्वेद चिकित्सक की राय से सेवन कर सकते हैं।

सभी एलर्जी जन्य रोगों में खान-पान और रहन-सहन का बहुत महत्व है इसलिए अपना खान-पान और रहन-सहन ठीक रखते हुए यदि ये उपाय अपनाएंगे तो अवश्य एलर्जी जन्य रोगों से बचे रहेंगे एलर्जी जन्य रोगों में अंग्रेजी दवाएं रोकथाम तो करती हैं लेकिन बीमारी को जड़ से खत्म नहीं करती हैं, जबकि आयुर्वेद की दवाएं यदि नियम पूर्वक ली जाती हैं तो रोगों को जड़ से खत्म करने की ताकत रखती हैं।

बैठक में पारित निर्णय

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तरंग सदस्यों की एक बैठक शनिवार दिनांक 20.09.2014 को आर्य समाज मस्जिद मौठ (नीति बाग) नई दिल्ली में सम्पन्न हुई जिसमें बहुत से निर्णय पारित हुए। उनमें से कुछ महत्व पूर्ण निर्णय प्रकाशित किये जा रहे हैं :-

शुद्धि सभा के अंतरंग सदस्यों की स्थिति :-

1. दक्षिण दिल्ली में कुल सदस्यों की संख्या (33) है। पश्चिमी दिल्ली में 027 और पूर्वी दिल्ली में 06 सदस्य एवं उत्तरी दिल्ली में कुल (04) सदस्य हैं।

शुद्धि सभा के अंतरंग सभा के सदस्यों को भिन्न-भिन्न आर्य समाजों की बैठकों में सम्मिलित होने में कठिनाई होने के कारण यह प्रस्ताव पारित किया गया कि भविष्य में यह बैठक आर्य समाज राजेन्द्र नगर तथा आर्य समाज सैक्टर-9 आर.के. पुरम् में भी होगी।

2. शुद्धि सभा के प्रचारक आ. इन्द्रमणि शास्त्री ने बताया है कि उड़ीसा प्रान्त में एक गौ-शाला बनाने की योजना है जिसमें प्रारम्भ में एक सौ (100) गायें रखी जायेंगी। इसके लिए स्थानीय गांव वालों ने एक एकड़ जमीन देने का आश्वासन दिया है और इस भूमि की बाउन्ड्री बनाने के लिए एक लाख रुपये (1,00,000) का खर्च आयेगा।

3. श्री के. एम. राजन केरल में शुद्धि का कार्य कर रहे हैं, उन्होंने एक निमन्त्रण पत्र भेजा है और आग्रह किया है कि वह केरल में 23.12.2014 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े ही उत्साह पूर्वक मनायेंगे, और इस कार्यक्रम में शुद्धि सभा दिल्ली से भी कुछ अधिकारी व सदस्य सम्मिलित हों।

4. कुछ आर्य महानुभावों का यह सुझाव था कि शुद्धिसभा की ओर से एक बड़ा आयोजन किया जाये, जिसमें शुद्धि कार्य को विस्तार देने के सुझाव रखे जायें, और आर्य समाज की उच्च संस्थाएँ जैसे-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली प्रदेश के अधिकारियों को आमन्त्रित किया जाये ताकि शुद्धि कार्य की जानकारी अधिक लोगों को मिले, यह भी निश्चय हुआ कि शुद्धि कार्य में सहयोग देने वाले तथा 50 से ऊपर आजीवन सदस्य बनाने वाले महानुभावों को सम्मानित किया जाये।

-हरबंस लाल कोहली (कार्यकारी प्रधान)